4

विश्वव्यापी भाईचारा

'' 'और इससे भविष्यवक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, ''... इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढ़ें।'' यह वही प्रजु कहता है जो जगत की उत्पज़ि से इन बातों का समाचार देता आया है' '' (प्रेरितों 15:15-18)।

किसी झगड़े का असली मुद्दा यह नहीं कि उसे शुरू किसने किया था, बल्कि यह है कि उसे सुलझाया जा सकता है या नहीं ताकि वह बढ़कर इतना बड़ा न हो जाए कि खत्म ही न हो। हम सब जानते हैं कि यदि छोटे झगड़े को सही ढंग से सुलझाया न जाए या उसे नज़रअंदाज़ कर दिया जाए, तो यह पज़्के दोस्तों में दुश्मनी का कारण बन सकता है।

प्रेरितों 15 के अनुसार, प्रारज़्भिक कलीसिया में *शिक्षा में एक विवाद* हुआ जो *संगति से संकट* में बदल गया। यहूदिया से आकर कुछ लोग यह सिखाने लगे थे कि अन्यजातियों में से मसीही बनने वालों को मूसा की व्यवस्था के अनुसार खतना करवाना आवश्यक है वरना उन्हें मसीही बनकर उद्धार नहीं मिल सकता (आयत 1)। यहूदी विचारधारा के इन शिक्षकों ने अन्यजातियों के लिए उद्धार की योजना में खतने की बात जोड़ दी थी। मसीहियत के प्रति उनका विचार पौलुस और बरनबास द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से दी अपनी सेवकाई में संदेश से बिल्कुल विपरीत था। इस कारण, पौलुस और बरनबास ने यहूदिया से आए इन भ्रमित शिक्षकों का सामना किया और उनके साथ लज़्बी चर्चा और बहस की (आयत 2)।

शिक्षा में असहमति की बात सुलझ नहीं पाई जिस कारण ऐसी फूट पड़ी जिससे मसीहियत का भविष्य प्रभावित हो सकता था। इस संकट से चौकन्ने होकर, अन्ताकिया में रहने वाले भाइयों ने पौलुस, बरनबास और अन्य भाइयों को दूसरे प्रेरितों व प्राचीनों के साथ शिक्षा के इस मुद्दे पर सलाह लेने के लिए यरूशलेम में भेजने का फैसला लिया।

परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ होने के कारण पौलुस को अन्यजातियों के उद्धार के विषय में परमेश्वर की सच्चाई मालूम थी और वह इसका प्रचार कर रहा था। परन्तु, कलीसिया की एकता के लिए वह यरूशलेम में गया ताकि परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लोग यह दिखाने के उद्देश्य से कि इस मुद्दे पर परमेश्वर ने ज़्या प्रकट किया है, एकमत हो सकें। यरूशलेम में एक विशेष सभा हुई, जिसमें प्रेरितों और कलीसिया के प्राचीनों ने इस प्रश्न पर ध्यान दिलाया।

उस सभा में पतरस ने खड़े होकर यह पुष्टि की कि परमेश्वर ने यहूदियों और अन्यजातियों

में कोई फर्क नहीं रखा है। कुरनेलियुस के परिवार पर आश्चर्यकर्म के द्वारा पवित्र आत्मा के बहाये जाने से (प्रेरितों 10:44-48) पतरस को यह समझाया गया कि परमेश्वर अन्यजातियों का उद्धार भी वैसे ही करेगा जैसे यहूदियों का कर रहा था (15:7-11)। पौलुस और बरनबास ने भी यह जोड़ा कि परमेश्वर ने उसी सुसमाचार के संदेश के द्वारा जो यहूदियों में सुनाया गया था उनकी सेवकाई में अन्यजातियों का उद्धार किया था (प्रेरितों 15:12)। अन्त में याकूब ने उन सब भाषणों को संक्षिप्त करते हुए एक निष्कर्ष निकाला जो परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए अलग-अलग लोगों पर प्रकट की गई परमेश्वर की बात का प्रतिनिधित्व करता था (प्रेरितों 15:13-21)। उसका निष्कर्ष यह था: परमेश्वर ने यह कहकर कि अन्यजातियों और यहूदियों के लिए एक ही योजना है कि यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के लिए भी परमेश्वर के राज्य का द्वार खोल दिया गया है।

कलीसिया के विश्वव्यापी भाईचारे के विषय में अपनी बात साबित करते हुए याकूब ने अन्यजातियों को लाने के सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा बताती आमोस 9:11, 12 की भविष्यवाणी उद्धृत की:

> इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा। इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढ़ें। यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है (प्रेरितों 15:16-18)।

याकूब ने कहा कि उनके बीच कही गई पतरस की बातें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की बातों से पूरी तरह मेल खाती हैं, और फिर उसने आमोस की यह भविष्यवाणी उद्धृत की जिसमें अन्यजातियों का उल्लेख था। पिन्तेकुस्त के उस ऐतिहासिक दिन जब कलीसिया की स्थापना हुई थी, पतरस ने पवित्र आत्मा के बहाए की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा था, ''परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई थी'' (प्रेरितों 2:16)। याकूब ने कहा, ''और इससे भविष्यवक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है कि'' (प्रेरितों 15:15)। जब परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ कोई आदमी किसी घटना, परिस्थिति या अपने सामने के किसी कार्य को देखकर पुराने नियम की भविष्यवाणी की ओर ध्यान दिलाते हुए कहता है, ''यह वह बात है जो भविष्यवक्ताओं ने कही थी,'' तो हम बिना कोई गलती किए तुरन्त समझ जाते हैं कि इसका अर्थ उस भविष्यवाणी का पूरा होना है।

आमोस की भविष्यवाणी में कलीसिया के विश्वव्यापी भाईचारे की बात कही गई थी। इसमें उस समय का चित्रण किया गया था जब यहूदियों और अन्यजातियों ने मसीह की देह में प्रवेश करके आपस में मिल जुलकर शांति से रहना था। पतरस द्वारा कुरनेलियुस के परिवार में और पौलुस द्वारा दूसरे अन्यजातियों में वचन सुनाने से यह भविष्यवाणी वास्तविकता बन गई थी। सुसमाचार के द्वारा, अन्यजाति लोग परमेश्वर के राज्य के परिवार में प्रवेश करते थे। यहूदी तथा अन्यजाति, जो पहले दो जातियां थीं, एक आत्मिक जाति या राष्ट्र

अर्थात कलीसिया बन रहे थे। अन्यजातियों को यहूदियों में और यहूदियों को अन्यजातियों में नहीं लाया जा रहा था; बल्कि यहूदी और अन्यजाति दोनों मसीही अर्थात परमेश्वर की ''पवित्र याजकाई'' (1 पतरस 2:5) बन रहे थे। यहूदी और अन्यजाति एक ही तरह अर्थात आज्ञा मानने वाले विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पा रहे थे; और एक ही लोग अर्थात परमेश्वर की संतान बन रहे थे। अनुग्रह से उद्धार पाने वालों में कोई छोटा-बड़ा नहीं था। कौम, उम्र या संस्कृति के कारण कोई छोटा-बड़ा नहीं था बल्कि सब बराबर थे।

आइए इस भविष्यवाणी के पूरा होने के अर्थों पर विचार करें जो मसीही संगति के आयामों की ओर ध्यान दिलाती है। इस एकता की विशेष बातें ज़्या हैं ? यह कितनी अर्थपूर्ण और विशाल है ?

हर प्रकार का पाप मिटना

पहले तो हम कलीसिया के भाईचारे की गहराई को देखते हैं। यह वह समझौता है जो हर पाप तक यीशु के बहुमूल्य लहू के पहुंचने के कारण ही हो सकता है। कोई पापी यदि अपना जीवन परमेश्वर के अनुग्रह के सामने खोल देता है तो वह इसकी पहुंच से दूर नहीं है।

ज़्योंकि यह मेल मसीह के लहू-द्वारा सृजा गया है, इसलिए इसमें वह गहराई है जो उस लहू की सामर्थ से ही मेल खा सकती है। *पाप चाहे कैसा भी हो, और कितना भी अधिक हो, उसके लहू से पूरी तरह सदा के लिए धो डाला जाता है।* इसलिए उसकी संगति से हमें केवल एक ही रुकावट रोक सकती है और वह पश्चाज़ाप न करने वाला मन है। यह भविष्यवाणी करते हुए कि ''उस समय दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिए पाप और मलिनता धोने के निमिज़ एक बहता हुआ सोता फूटेगा'' (जकर्याह 13:1), जकर्याह शुद्ध करने वाले सोते में यीशु के लहू द्वारा शुद्ध करने की बात कर रहा था।

वेश्यागामियों, मूर्तिपूजकों, परस्त्रीगामियों, लुच्चों, पुरुषगामियों, चोरों, लोभियों, पियज़्कड़ों, गाली देने वालों और अंधेर करने वालों के विषय में लिखने के बाद पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को यह कहते हुए प्रोत्साहित किया, ''और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे'' (1 कुरिन्थियों 6:9-11)। इस आयत में अद्‌भुत सच्चाई है जिसे सुसमाचार का महान सत्य कहा जाता है: जब पापी लोग मसीह के पास आते हैं, तो उन्हें धो डाला (शुद्ध किया) जाता, पवित्र किया जाता (पवित्र कार्य के लिए इस्तेमाल हेतु अलग किया जाता) और धर्मी ठहराया (दोष से मुज़्त कर दिया) जाता है!

पुन: पौलुस की सूची को देखकर ध्यान दें कि ये पाप चाहे जितने भी घृणायोग्य थे, परन्तु इनसे कुरिन्थुस में मसीही बनने वाले लोग कलीसिया की संगति से बाहर नहीं हुए। आज्ञा मानने वाले विश्वास में परमेश्वर के पास आने वाले को, उसने उन पापों से अपने पुत्र के लहू से धो दिया, धर्मी ठहराया और उस देह में दूसरे सब लोगों की तरह उन्हें मसीह की देह में पहुंचाया। यह सच है कि कुछ पापों का असर दूसरे पापों से अधिक होता है, परन्तु सच्चाई से मन फिराने में परमेश्वर की बात मानने वाले का कोई भी पाप क्षमा किया जा सकता है।

एक समय ऐसा आता है जब व्यभिचार करने वाला व्यभिचारी नहीं रहता और चोर चोर नहीं कहलाता। पूछो, ''कब ?'' परमेश्वर की ओर से क्षमा पाने के बाद। पौलुस ने लिखा, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)। सुसमाचार वाला मसीह महिमा से इतना परिपूर्ण है कि हमारे द्वारा उसकी बात मानने पर, वह पाप के हमारे पुराने जीवनों को फैंककर नया जीवन पहना देता है, और हमें आत्मिक आशिषों तथा ईश्वरीय संगति के स्वर्गीय क्षेत्र में ले आता है।

यीशु में नया मनुष्य बनने से बड़ी और कोई बात नहीं हो सकती। कोई चाहे कैसा भी ज़्यों न हो, उसने कुछ भी ज़्यों न किया हो, कुछ भी ज़्यों न कहा हो, या कैसी भी शिक्षा ज़्यों न दी हो, परमेश्वर उसे बलिदान के मेमने के लहू में धो डालता है, मसीह के स्वरूप में फिर से ढालने की प्रक्रिया शुरू कर देता है और मसीह में उसे नया जीवन देता है। इस प्रकार, ''नई शुरुआत'' करने का सही स्थान केवल मसीह यीशु में है।

हमें कलीसिया के जीवन की गहराई याद रखनी चाहिए। जब कोई पुरुष या स्त्री सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीह के पास आता है और लहू में धोया जाता है, तो वह उन सब दूसरे लोगों का भाई या बहन बन जाता या जाती है जो विश्वास से मसीह में बने हुए हैं। धुल जाने के बाद, कोई दाग नहीं रहता; परमेश्वर के अनुग्रह से पूरी तरह शुद्धि मिल जाती है। कोई मसीह की देह में आधा या अधूरा प्रवेश नहीं करता अर्थात या तो वह मसीह में है या नहीं है। थोड़ा-थोड़ा करके कोई संगति नहीं करता अर्थात पांचवां हिस्सा शुद्ध हो जाए या एक समय में एक भाग मसीह नहीं आता। अर्थात थोड़ा-थोड़ा करके किसी का उद्धार नहीं होता। उसे चरणों में सिखाया तो जा सकता है परन्तु मसीह में आने का एक ही चरण है, और वह मसीह में बपतिस्मा है (गलतियों 3:27)। कोई मनुष्य मसीह में पूरा ही प्रवेश करता है और मसीह के राज्य के दूसरे सभी सदस्यों की तरह पूर्णतया धर्मी, अर्थात पूर्ण उद्धार पाया हुआ बन जाता है। इसलिए मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर के परिवार में एक दूसरे को समझकर सबके साथ भाई-बहनों की तरह रहें।

सब लोगों में

फिर हम कलीसिया की अद्‌भुत चौड़ाई को देखते हैं। परमेश्वर का परिवार शज़्ति में मानवीय परिवार की तरह ही विशाल है। इस परिवार में किसी को उसकी जाति, सामाजिक पृष्ठभूमि या संस्कृति के कारण आने से रोका नहीं जाता। प्रेरितों 15:16-18 में, यह सिद्ध करने के लिए कि यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए उद्धार की पेशकश की परमेश्वर की योजना *भविष्यवाणी में पहले से बताई गई थी और प्रेरितों की शिक्षा में पूरी हुई है,* याकूब ने आमोस 9:10, 11 को उद्धृत किया।

नये नियम के समय में संसार में मुज़्यत: केवल दो ही जातियां थीं-यहूदी और अन्यजाति। जो यहूदी नहीं होता था वह अन्यजाति कहलाता था। इसलिए, जब यह प्रमाण दिया गया कि परमेश्वर ने किस प्रकार परमेश्वर के राज्य के लिए यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए द्वार खोल दिया है, तो वास्तव में प्रमाण यह था कि परमेश्वर ने सारे संसार की सब जातियों

को अपने राज्य में प्रवेश करने का अवसर दिया है।

जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के द्वारा उद्धार का ढंग बताया है, उसने सूचित किया कि एक दिन सब जातियों को सुसमाचार दिया जाएगा, यद्यपि पतरस पूरी तरह से यह नहीं समझ पाया कि आत्मा ज़्या कहने में उसकी अगुआई कर रहा था। उसने कहा, ''ज़्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुज़्हारी संतानों और सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। ''सब दूर-दूर के लोगों के लिए'' का अर्थ निश्चित तौर पर अन्यजाति संसार के लिए है। परन्तु, बाद में परमेश्वर के लिए कम से कम पांच विज्ञप्तियों में पतरस को कुरनेलियुस के घर जाकर अन्यजातियों में सुसमाचार का संदेश सुनाने का निर्देश देना आवश्यक था: (1) उसने कुरनेलियुस को दर्शन दिया (प्रेरितों 10:3-6); (2) उसने पतरस को दर्शन दिया (प्रेरितों 10:9-16); (3) आत्मा के द्वारा उसने पतरस को उसे लेने आए लोगों के साथ चलने का निर्देश दिया (प्रेरितों 10:19, 20); (4) कुरनेलियुस ने पतरस को उस दर्शन की बात बताई जो उसे मिला था (प्रेरितों 10:30-33); और (5) कुरनेलियुस के घराने पर परमेश्वर ने पवित्र आत्मा वैसे ही बहाया जैसे पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों पर बहाया था (प्रेरितों 10:44, 45)। कुरनेलियुस और उसके परिवार पर पवित्र आत्मा के बहाये जाने का अंतिम संकेत पतरस के लिए निर्णायक था। उसका तत्काल उज़र सकारात्मक और निर्णायक था:

> इस पर पतरस ने कहा; ज़्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है? (प्रेरितों 10:47)।

पतरस को यह स्पष्ट हो गया था कि उद्धार पाने के लिए यहूदियों को दी गई शर्तों की तरह ही अन्यजातियों को उद्धार पाने की पेशकश का दिन आ गया है।

यीशु ने पतरस द्वारा यीशु को मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र मानने के समय उससे एक प्रतिज्ञा की थी: ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा'' (मज़ी 16:19)। उस प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, पतरस को पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्तें बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ (प्रेरितों 2:37-39), और यही सौभाग्य, कुरनेलियुस और उसके परिवार में सुसमाचार का मार्ग बताते हुए दिया गया था (प्रेरितों 10:34-43)।

मैं जब अपनी बाइबल ज़्लासों में प्रेरितों के काम के अध्याय 10 पर आता हूं, तो अज़्सर पूछता हूं कि ज़्लास में कोई ऐसा व्यज़्ति है जो यहूदी हो। प्राय: कोई हाथ नहीं उठता। मैं उन्हें यह बताने के लिए आगे बढ़ता हूं कि हमें प्रेरितों 10 अध्याय के लिए धन्यवादी होना चाहिए, ज़्योंकि यह अध्याय बताता है कि हमें यहूदियों की तरह ही उद्धार पाने के लिए सुसमाचार की किन शर्तों का पालन करना है। फिर हम प्रेरितों 10 अध्याय के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देने के लिए इकट्ठे होते हैं!

कलीसिया की सदस्यता की अद्‌भुत बढ़ोतरी पर ध्यान दें। संसार के सब देशों और जातियों का दर्शन देखें। अलग-अलग भाषाओं, रीतियों तथा समाजों पर विचार करें। कल्पना करें कि पृथ्वी के सब लोग कहां रहते और ज़्या करते हैं। उन पुरुषों का चित्र बनाएं जो जवान और बलवान हैं और उनका भी जो बूढ़े और अपंग हैं; कुंवारी और विवाहित युवतियों का, अधेड़ उम्र वाली और बूढ़ी स्त्रियों का भी चित्र बनाएं। फिर परमेश्वर को धन्यवाद दें कि सुसमाचार सब देशों, जातियों, समाजों, गोत्रों, सब परिवारों, और सब वयस्क लोगों के लिए है! किसी को भी छोड़ा नहीं गया है। जैसे पौलुस ने कहा है, ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; ज़्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलतियों 3:28)।

सब प्रकार की आत्मिक आशिषों तक

तीसरा, हम कलीसिया के भाईचारे की स्वर्गीय ऊंचाई को देखते हैं। मसीही लोगों के लिए यीशु के लहू की पहुंच के कारण, स्वर्ग के धन की बहुतायत का द्वार खुला है। मसीही कौम जिसे कलीसिया कहा जाता है केवल कुछ एक लोगों को दूसरों से बढ़कर आशीष नहीं मिली है। परमेश्वर के राज्य में सब लोगों को समान अवसर मिलता है। कलीसिया में उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निज़्न वर्ग की श्रेणियां नहीं हैं। राजसी याजकाई में द्वितीय श्रेणी की कोई नागरिकता, या अलग से चुने हुए याजक नहीं हैं। कोई मसीह में आने से इन्कार करके खो सकता है (इफिसियों 2:11, 12); कोई मसीह में होते हुए मसीह के प्रति अविश्वासी होकर खोया हुआ हो सकता है (2 पतरस 2:21, 22); परन्तु जो भी मसीह में आ गया है और वफादारी से मसीह में बना रहता है उसे सब चीज़ें मिलती हैं और हम उसके लिए कहा जा सकता है, ''ज़्या पौलुस, ज़्या अपुल्लोस, ज़्या कैफा, ज़्या जगत, ज़्या जीवन, ज़्या मरण, ज़्या वर्तमान, ज़्या भविष्य, सब कुछ तुज़्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है'' (1 कुरिन्थियों 3:22, 23)।

परमेश्वर के परिवार में मसीही लोगों के लिए
एक दूसरे को बराबर समझना और एक
दूसरे के साथ भाइयों और बहनों
की तरह रहना आवश्यक है।

मसीह में होने वाला कोई भी पौलुस द्वारा की गई स्तुति को दोहरा सकता है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)। पौलुस के साथ हम कह सकते हैं कि मसीह में हम ''भरपूर हो गए'' हैं (कुलुस्सियों 2:10)। मसीह में होने वालों के लिए कहा जा सकता है कि ''परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुज़्हें बहुतायत से दे सकता है

जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो'' (2 कुरिन्थियों 9:8)।

वह ''सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया गया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है'' (2 पतरस 1:3)। ''पूरे विश्वास के साथ'' (इब्रानियों 10:22) हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं, क्योंकि मसीह के द्वारा हमारी ''एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है'' (इफिसियों 2:18)। हमें एक आशा मिली है जो ''स्थिर और दृढ़'' (इब्रानियों 6:19) है। हम मसीह के हैं, और यीशु अपनी पूरी महिमा और अनुग्रह में हमारा है। जहां मसीह है वहां हम हैं, और जो मसीह का है वह हमारा है, क्योंकि हम मसीह के साथ संगी वारिस हैं (रोमियों 8:17)।

यह किसी देश का राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री बनने जैसा है। उस देश के लिए आपके महत्व के कारण आपको अच्छे से अच्छा भोजन दिया जाता है, अच्छे से अच्छे कपड़े, सुरक्षा के लिए अंगरक्षक और रहने के लिए महल दिया जाता है। एक अर्थ में आपके हाथ में देश के सारे संसाधन हैं। यदि जरूरत हो तो आप उस नगर की सुरक्षा के लिए देश की पूरी सेना को बुला सकते हैं। आपकी हैसियत के कारण आपको ऐसे विशेषाधिकार और व्यवस्था मिली है कि आप वहां जा सकते हैं जहां आम लोगों की पहुंच नहीं होती।

इसी प्रकार, मसीह में हमें वे सभी धन, अधिकार और संसाधन मिले हैं जो परमेश्वर की संतान के लिए हैं। मसीह में रहते हुए, परमेश्वर ने जो कुछ भी अपने बच्चों को दिया है, वह हमारे अधिकार में है।

बेशक, आशीषित होने का अवसर एक बात है, परन्तु उस अवसर का पूरा लाभ उठाना दूसरी बात है। मसीह में हमें राज्य में होने के लाभ पाने की पूरी छूट है, लेकिन (लापरवाही या अज्ञानता के कारण) हो सकता है कि हम इस आत्मिक धन को प्राप्त न कर पाएं। परन्तु एक महत्वपूर्ण सच्चाई को नहीं भुलाया जाना चाहिए कि हम *परमेश्वर के करीबी लोग तो हैं परन्तु वह किसी पर विशेष रूप से कृपा नहीं करता।* यदि मसीह में रहने वाला कोई व्यक्ति छुटकारा पाए हुए लोगों को मिलने वाली परमेश्वर की बहुतायत की आशिषों से वंचित है, तो यह उसकी अपनी पसन्द के कारण है न कि इसलिए कि अवसर से वंचित किया गया। मसीह में आत्मिक निर्धनता में रहने वाला व्यक्ति वही है जो उसे दिए गए परमेश्वर तक पहुंच के लाभों का इस्तेमाल नहीं करता।

कलीसिया के समाज की स्वर्गीय ऊंचाई पर विचार करें। यह पृथ्वी पर वह स्थान है जहां परमेश्वर के अवसर की वास्तविक समानता मिलती है। आइए मसीह में अन्य लोगों के साथ अपने सम्बन्धों में इस सच्चाई पर ध्यान देते हुए जीवन बिताएं। परमेश्वर करे कि हम निर्धनता, रंगभेद, शिक्षा या किसी की जाति के कारण अन्य मसीहियों को कभी हीन न समझें। आइए किसी मसीही को उसकी स्थिति, सामर्थ, विशेषाधिकारों, या व्यक्तित्व के कारण किसी दूसरे मसीही से ऊंचा न करें। हम सब एक हैं इसलिए एक दूसरे के साथ और एक दूसरे के लिए जीएं (1 कुरिन्थियों 12:27)।

सारांश

मसीह की देह एक विश्वव्यापी भाईचारा है। प्रेरितों 15 अध्याय में याकूब के अनुसार आमोस 9:10, 11 में ऐसी संगति की भविष्यवाणी की गई थी। हम इस भविष्यवाणी को अन्यजातियों के लिए प्रेरितों की शिक्षा में पूरा होते देखते हैं। इसकी शानदार गहराई हर एक पाप तक पहुंचकर उसे मिटा देती है। मसीह के लहू की सामर्थ के कारण, किसी पापी को इससे निकालने की आवश्यकता नहीं है। इसकी वह अद्‌भुत चौड़ाई है जो सब देशों और सब लोगों तक पहुंचती है। यीशु ने हर व्यक्ति के लिए मृत्यु का स्वाद चखा और उसने हर किसी को उद्धार के लिए अवसर दिया है (इब्रानियों 2:9)। परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ इस सम्बन्ध की एक स्वर्गीय ऊंचाई जो मसीह में अनुग्रह के हर उच्च गुण तक पहुंचती है। उन लोगों के लिए जो मसीह में आकर उसमें बने रहते हैं आत्मिक आशिषें बहुतायत में हैं!

क्या आप असमानता और सम्पन्नता के इस क्षेत्र से बढ़कर कोई और आकर्षित चीज़ देख सकते हैं? संसार शांति की बड़ी-बड़ी बातें करता है, परन्तु संसार की शांति में हमें बहुत कम सच्चाई मिलती है। क्यों? क्या इसलिए नहीं कि हम यह नहीं समझ पाए कि सच्ची शांति कहां है और कैसे पाई जा सकती है? सच्ची शांति अर्थात परमेश्वर के साथ मेल, दूसरे लोगों के साथ मेल और अपने साथ मेल केवल कलीसिया अर्थात मसीह की देह में ही पाई और दिखाई जा सकती है। यशायाह ने शांति के राज्य के आने की मसीह के आने से सात सौ साल पहले भविष्यवाणी की थी:

> तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा। गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल के समान भूसा खाया करेगा। दूध-पीता बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसे भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है (यशायाह 11:6-9)।

यशायाह ने बहुत उच्च स्तर की अलंकारिक भाषा से उस तेजस्वी एकता की तस्वीर दिखाई जो मसीह की देह में ही मिल सकती थी। यशायाह के लिए, यह *एक भविष्यवाणी* थी जो तब पूरी होनी थी जब मसीह ने आकर अपना राज्य स्थापित करना था परन्तु हमारे लिए यह मसीह में मिलने वाले प्रतिदिनि के भोजन का *एक भाग* है। भेड़िए जैसे स्वज़ाव को हम मसीह के द्वारा कबूतर की तरह हानिरहित होते और मेमने जैसे व्यक्ति के साथ चलते और काम करते देखते हैं।

मसीह में हमें ''एक नया मनुष्य बनाया'' जाता है, क्योंकि हमें मसीह के लहू के द्वारा परमेश्वर और एक दूसरे से मिलाया जाता है; और इस प्रकार हम ज्योति में चलते हुए इस

शांति में रहते हैं (इफिसियों 2:15-18; 1 यूहन्ना 1:7)।

ज़्या आप मसीह की देह के भाईचारे का एक भाग हैं? यदि नहीं, तो उस अनुग्रह, उन सज़्बन्धों और उदार वरदानों पर विचार करें जिनसे आप वंचित हैं। ''ज़्योंकि हम सब ने ज़्या यहूदी हों, ज़्या यूनानी, ज़्या दास, ज़्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)।

मानवीय भाईचारे का भाग होना ही काफ़ी नहीं है। परमेश्वर के परिवार का भाग भी होना आवश्यक है।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रेरितों 15 अध्याय की पृष्ठभूमि में झगड़ा ज़्या था?
2. उद्धार की योजना में कुछ यहूदी मसीहियों ने ज़्या बात जोड़ी थी?
3. यरूशलेम की सभा को किसने सज़्बोधित किया था और उसने ज़्या कहा था?
4. याकूब ने यरूशलेम की सभा में सबकी बातों को किस प्रकार संक्षिप्त किया था?
5. यरूशलेम की सभा का ज़्या उद्देश्य था?
6. सुसमाचार की बुलाहट से बाहर रहने वाले लोगों का वर्णन करें और बताएं कि वे बाहर ज़्यों हैं।
7. 1 कुरिन्थियों 6:9-11 पर चर्चा करें। इस पद से हमें सुसमाचार के क्षेत्र के बारे में ज़्या पता चलता है।
8. उस नये जीवन का वर्णन करें जो परमेश्वर हमें मसीह में आने पर देता है।
9. ज़्या यह सही है कि कोई आधा अधूरा कलीसिया में प्रवेश नहीं कर सकता? अपना उज़र विस्तार से बताएं।
10. पवित्र शास्त्र से यह सिद्ध करें कि सुसमाचार यहूदी और अन्यजाति सब लोगों के लिए है।
11. गलतियों 3:28 की व्याज़्या करें।
12. ''सब प्रकार की आत्मिक आशिषों तक खुली पहुंच'' का ज़्या अर्थ है?
13. इफिसियों 1:3 की व्याज़्या करें।
14. ''हो सकता है कि किसी के पास किताबें हों लेकिन वे उसकी अपनी न हों'' कथन पर चर्चा करें। यह अवधारणा मसीही आशिषों में कैसे लागू होती है?
15. शांति के सच्चे मार्ग की व्याज़्या करें।